यमुना में बिना शोधित पानी गिरने की समस्या छह माह में होगी दूर : शेखावत

राष्ट्रीय नदी संगम में केंद्रीय मंत्री बोले, नदियों को बचाने के लिए भूजल का संरक्षण जरूरी

राज्य ब्यूरो, जागरण ● नई दिल्ली: केंद्रीय पर्यटन और संस्कृति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा, यमुना को दिल्ली में एक बूंद भी स्वच्छ जल नहीं मिलता है। अनुपचारित सीवेज (बिना शोधित पानी) गिरने की समस्या दूर करने को ओखला में दो-तीन माह में एशिया का सबसे बड़ा सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी) शुरू हो जाएगा। दिल्ली सरकार के अधिकांश एसटीपी मानक के अनुरूप काम नहीं करते हैं। इनके उन्नयन को निवेश किया गया है। पांच-छह माह में अनुपचारित सीवेज की समस्या दूर हो जाएगी। वह भारत नदी परिषद की भारत मंडपम में आयोजित राष्ट्रीय नदी संगम को संबोधित कर रहे थे।

भारत मंडपम में राष्ट्रीय नदी संगम कार्यक्रम में नदी गाथा पत्रिका का विमोचन करते (बाएं से) भारतीय नदी परिषद के अध्यक्ष रमन कांत, देव संस्कृति वि. (हरिद्वार) के कुलपति डा. चिन्मय पांडया, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, स्वामी चिदानंद सरस्वती ● ध्रुव कुमार

शेखावत ने कहा कि यमुना को अविरल बनाने के लिए जल का प्रवाह भी बढ़ाना होगा। तीन-चार वर्षों में हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड में रेणुका, लखवार व किशाऊ बांध बनने के बाद कानून बनाकर यमुना को उसके हिस्से का कम से कम तीन हजार क्यूसेक पानी छोड़ा जाएगा। उससे यमुना का संकट दूर हो जाएगा। लोग इसमें डुबकी भी लगा सकेंगे और अर्घ्य भी दे सकेंगे। नदियों को बचाने के लिए सरकार के साथ ही हम सभी को अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी।

उन्होंने कहा कि पिछले 50 वर्षों में सामाजिक उत्तरदायित्व कम होने से समस्या बढ़ी है। प्रकृति से जुड़ाव बढ़ाकर इसका समाधान संभव है, इसलिए प्रधानमंत्री ने जल आंदोलन को जन आंदोलन में बदल दिया। नदी को निर्मल व अविरल बनाने के लिए भूजल स्तर सुधारने, तालाब और अन्य जल स्रोत को बचाना होगा। नमामि गंगे में इसका ध्यान रखा गया। इससे गंगा को मात्र पांच वर्षों में प्रदूषण मुक्त किया गया। वहीं, ब्रिटेन, स्वीडन आदि देशों में नदी को प्रदूषण मुक्त करने में 20 से 30 वर्ष लगे। देश में डेढ़ लाख से अधिक अमृत सरोवर तैयार हो गए। देश के 700 जिलों में जल संरक्षण और भूजल स्तर में सुधार के लिए सफलतापूर्वक काम हो रहा है। देश के 48 लाख जल स्रोत का विवरण आनलाइन उपलब्ध है।

उन्होंने कहा कि भारत में जल की चुनौती बड़ी है, क्योंकि सबसे अधिक जनसंख्या होने के साथ ही यहां कि अधिकांश नदियां मानसून पर निर्भर हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून की अवधि कम होने लगी है। जल को शोधित कर कृषि, उद्योग आदि में फिर से उपयोग करने से नदियों का पानी करीब 10 प्रतिशत बचेगा इससे उन्हें अविरल बनाने में मदद मिलेगी।

परमार्थ निकेतन ऋषिकेश के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती ने कहा कि यमुना आज डायलिसिस पर है। इसे बचाने के लिए हम सभी को अपना योगदान देना होगा। उस दिन का इंतजार है, जब गंगा दिवस की तरह यमुना दिवस मनाया जाएगा। देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार के प्रति कुलपति डा. चिन्मय पांड्या ने कहा अपनी संस्कृति व परंपरा को भूलने के कारण नदियां व अन्य जल स्रोत समाप्त हो रहे हैं। भारतीय नदी परिषद के अध्यक्ष रमन कांत ने कहा कि युवाओं को नदियों की जानकारी देने व विशेषज्ञ तैयार करने के लिए नदी विश्वविद्यालय बनाने की जरूरत है। इस दौरान शेखावत ने परिषद की पोर्टल और पत्रिका का विमोचन किया। कार्यक्रम में परिषद के सलाहकार कुंवर शेखर विजेंद्र व मनु गौड़, लक्ष्मण सिंह, उमा शंकर पांडेय, पोपटराव पंवार, कंवल सिंह चौहान, भारत भूषण त्यागी, सेतपाल सिंह, प्रो.विनोद तारे, शूटर दादी प्रकाशी तोमर सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

nwda.gov.in